

What is Arya Samaj?

Arya Samaj founded by Maharishi Dayanand Saraswati is an institution based on the teachings of Vedas for the welfare of universe. It propagates the universal doctrines of humanity. It is neither a religion nor a sect.

ARYAN VOICE

YEAR 39

04/2017-18

MONTHLY

April 2017

Festivals celebrated at Arya Samaj Bhavan

ARYA SAMAJ FOUNDATION DAY & RAM NAVMI
Sunday 9th April 2017
11am – 1pm

VEDIC VIVAH MELA-(Matrimonial get together)
Saturday 20th May 2017
Book your place NOW....!
(For more information see page 20&21)

ARYA SAMAJ (Vedic Mission) WEST MIDLANDS
(Charity Registration No. 1156785)
188 INKERMAN STREET (OFF ERSKINE STREET), NECHELLS,
BIRMINGHAM, B7 4SA

Tel: 0121 359 7727

E-mail– enquiries@arya-samaj.org Website: www.arya-samaj.org

CONTENTS

10 Principles of Arya Samaj		3
True Protectors	Mr Krishan Chopra	4
अमरहुतात्मा वीर पं. लेखराम “आर्य पथिक”	आचार्य डॉ. उमेश यादव	6
Sanskar – Nishkraman		11
Republic Day of India Celebrations 2017	Brij Bala Duggal	14
Please save the original book “Satyarth Prakash”		16
सत्यार्थ प्रकाश में परिवर्तनरूप षडयन्त्र	आचार्य डॉ. उमेश यादव	18
Matrimonial Get Together 2017		20
News (पारिवारिक समाचार)		22
Changes to Matrimonial Service in 2017		25

**For General and Matrimonial Enquiries
Please Ring**

Miss Raji (Rajashree) Chauhan (Office Manager)

Monday to Friday between: - 2.30pm to 6.30pm,

Wednesday: - 11.00am to 1.00pm.

Bank Holidays – Closed - Tel. 0121 359 7727

E-mail- enquiries@arya-samaj.org

10 Principles of Arya Samaj

- 1. God is the primary source of all true knowledge and all that is known by its means.(At the beginning of creation, nearly 2 Billion years ago, God gave the knowledge of 4 Vedas to four learned Rishis named Agni, Vayu, Aditya and Angira. Four Vedas called Rigved, Yajurved, Samved and Atharva Ved contain all true knowledge, spiritual and scientific, known to the world.)**
- 2. God is existent, intelligent and blissful. He is formless, omnipotent, just, merciful, unborn, infinite, invariable (unchangeable), having no beginning, matchless (unparalleled), the support of all, the master of all, omnipresent, omniscient, ever young (imperishable), immortal, fearless, eternal, holy and creator of universe. To him alone worship is due.**
- 3. Vedas are the scripture of all true knowledge. It is paramount duty of all Aryan to read them, teach and recite them to others.**
- 4. All human beings should always be ready to accept the truth and give up untruth.**
- 5. All our actions should be according to the principles of Dharma i.e. after differentiating right from wrong.**
- 6. The primary aim of Arya Samaj is to do good to the human beings of whole world i.e. to its physical, spiritual and social welfare.**
- 7. All human beings ought to be treated with love, justice and according to their merits as dictated by Dharma.**
- 8. We should all promote knowledge (Vidya) and dispel ignorance (Avidya).**
- 9. One should not be content with one's own welfare alone but should look for one's welfare in the welfare of all others.**
- 10. In matters which affect the well being of all people an individual should subordinate any personal rights that are in conflict with the wishes of the majority. In matters that affect him/her alone he/she is free to exercise his/her human rights.**

True Protectors

By Mr Krishan Chopra

बोधश्च त्वा प्रतीबोधश्च रक्षतामस्वप्नश्च त्वानवद्राणश्च रक्षताम् । गोपायंश्च
त्वा जागृविश्च रक्षताम् ॥ अथर्ववेद ८.१.१३

Bodhasca tva pratibodhsca rakshtam asvapnasca tva
navadransca rakshtam I gopayansca tva jagrvisca rakshtamII

Atharva Veda 8.1.13

Meaning in Text Order

Bodhah = wisdom

Ca= and

Tva = you

Pratibodhah = vigilance

Ca =and

Rakshtam = may protect you

Asvapnasca = observance

Ca = and

Anavadranah = keeping away from evil deeds

Ca = and

Rakshtam = may guard

Gopayan = the quality of self defense

Ca = and

Tva = to you

Jagrvih = alert

Ca = and

Rakshtam = safeguard you

Meaning

O man! May knowledge and vigilance protect you. Keep yourself safe from laziness and evil tendencies. May the quality of self defence and alertness safeguard you.

Contemplation

O man! Never consider yourself helpless in this world. Don't be despondent and don't consider yourself feeble, weak or indistinct. You might not receive human help in time but your own qualities may be able to protect you. It is up to you to utilise your own wisdom. Knowledge you have acquired from your noble teachers can help to safeguard you.

When you have sufficient knowledge then you will acquire the strength of alertness and understanding. You will have the ability to understand the unknown. You will be able to comprehend the unseen, unheard and obscure. Remember! Laziness is the greatest enemy within the self, and those who have wicked tendencies destroy their glory and all the fulfilment of life.

Therefore, it is advisable to follow the commands of the Vedas, teachings and experiences of righteous people and learn from those experiences. You have to develop the spirit of self defence and vigilance. Those who can help themselves have others who will also come to their help and those who cannot help themselves, have nobody coming to help them.. You have to be alert in this world otherwise there are many opportunists who wait to damage you.

If you adopt these qualities then there will be no fear in you and you will protect yourself, no one will be able to destroy you. You will live a long life and all your desires will be fulfilled.

ओ३म्

अमरहुतात्मा वीर पं. लेखराम “आर्य पथिक”

आचार्य डॉ. उमेश यादव

पं. लेखराम जी महर्षि दयानन्द सरस्वती के समकालीन एक प्रखर आर्य प्रचारक रहे । वे एक भावुक, मेधावी, प्रत्युत्पन्नमति, धार्मिक, सैद्धान्तिक, स्वतन्त्रताप्रिय, अत्यन्त यज्ञप्रिय, कविताप्रिय, प्रखर वैदिक वक्ता एवं सच्चे ईश्वरभक्त थे ।

जन्म- पं. लेखराम का जन्म एक पंजाब के झोलम जिले के एक साधारण गाँव में हुआ । उनका कुल सारस्वत ब्राह्मण था । उनके दादा महता नारायण सिंह एक तात्कालिक वीरयोद्धा थे । उनके पिता महता तारा सिंह एक सैनिक थे । ८ सौर चैत्र सम्वत् १९१५ विक्रमी शुक्रवार तदनुसार ई. सन् १८५८ को उनका जन्म उक्त गाँव में ही हुआ ।

उनकी शिक्षा सामान्य थी पर उर्दू और फारसी की ही थी । उस समय की परिपाटी ही केवल उर्दू और फारसी ही उन क्षेत्रों में पढ़ने की थी जिसमें वे अत्यन्त प्रखरवुद्धि के होने के नाते उन्हें माहिर प्राप्त था । कालान्तर में अपनी मेहनत से कामचलाउ हिन्दी व संस्कृत का ज्ञान भी प्राप्त कर लिया था । उर्दू व फारसी भाषा इस्लामिक सिद्धान्तों को काटने में उनके लिये अत्यन्त सहायक सिद्ध हुयी । वे बड़े धड़ल्ले से कुरान के आयत पढ़ लेते थे और वैदिक सिद्धान्तों के साथ तुलना कर वस्तु स्थिति को शीघ्रता से समझ लेते थे । इस्लामिक वन्धुओं को बड़ी सहजता पूर्वक बताया करते थे कि कुरानों की अधिकांश बातें वेदों में पूर्व से ही विद्यमान हैं । अतः मूल और सत्य धर्म का मूल वेद ही हैं ।

पं. लेखराम अपने प्रिय चाचा पं. गंडाराम के साथ वचपन में मन्दिर जाया करते थे । शिव की पूजा व कृष्ण की पूजा किया करते थे । बड़ी श्रद्धा से एकादशी का व्रतोपवास रखा करते थे । यह थी उनकी वचपन की आस्था की चर्या । युवा होने पर लगभग १७-१८ वर्ष की ही

उम थी तभी सम्बत् १९३२ में अपने पुलिस-इन्स्पेक्टर चाचा पं. गंडाराम की सहायता से उन्होंने भी पुलिस-सर्जेंट की नौकरी प्राप्त कर ली। इस वीच उन्हें आर्यसमाज के प्रचारक मुंशी कन्हैयालाल की पुस्तक हाथ लगी जिसमें मोहम्मदी सिद्धान्तों का खण्डन तथा कुछ पौराणिक और ईसाइयत सिद्धान्तों का भी खण्डन वर्णित था। वैदिक सिद्धान्त ही प्रबल है; सत्य और सनातन है, ऐसा विस्तार वर्णन पाकर लेखराम की ज्ञान-चक्षु खुल गयी। कुछ शंकायें भी मन-मस्तिष्क में घर करने लगीं। उन्हें पता चला कि महर्षि दयानन्द सरस्वती अजमेर में सेठ फतेहमल की वाटिका में रुके हुये हैं। सम्बत् १९३७ तदनुसार १७ मई १८८० को उन्होंने अजमेर जाकर महर्षि के प्रथम और अन्तिम दर्शन किये। तब वे सम्बत् १९३६ में ही पेशावर में स्थापित आर्य समाज के सदस्य बन चुके थे। जिज्ञासा प्रबल थी। शंका समाधान का अवसर भी स्वामी दयानन्द के साथ अनुकूल ही मिल गया। लेखराम ने वहाँ लगभग १० शंकायें रखीं जो वैदिक सिद्धान्तों को समझने में इन्हें कठिनाई हो रही थी जिनमें तीन प्रमुख शंकाओं का उल्लेख स्वयं लेखराम जी ने किया है, वे इस प्रकार से हैं:-

१. ब्रह्म और जीव में भेद- महर्षि ने विस्तार से बताया जिसमें जीव को सत् व चित् वाला, प्रकृति को सत् वाला और ब्रह्म को सत्, चित् व आनन्द वाला कहकर ब्रह्म को “सच्चिदानन्दस्वरूप” बताया जो सर्व सत्ताओं में सर्वोपरि है। विस्तार से जानने के लिये अपने भाष्य यजुर्वेद का ४० वाँ अध्याय पढ़ने की सलाह दी।

२. दूसरा प्रश्न पूछा कि हमें अन्य मतावलम्बियों को शुद्ध कर वैदिक धर्म में लाना चाहिये वा नहीं? महर्षि ने उत्तर दिया-अवश्य। अर्थात् शुद्धि-कार्य की अनुमति उन्हें स्पष्टरूप से मिल गयी।

३. विद्युत् कहाँ है और उसकी उत्पत्ति कैसे होती है? महर्षि का उत्तर- विद्युत् सब स्थानों में है पर यह रगड़ से पदा होती है। बादलों की विद्युत् भी बादलों और वायु की रगड़ से ही पदा होती है। ऐसा इसलिये पूछा था कि वेदों में अनेक स्थानों पर विद्युत् की उत्पत्ति की चर्चा की हुयी है। विज्ञान-बोधक अन्य सिद्धान्तों का वर्णन भी वेदों में उपलब्ध है।

इस तरह अब लेखराम जी वैदिक धर्म के प्रति आस्वस्थ हो गये और वैदिक धर्म का प्रचार अधिकाधिक करने लगे। पुलिस की नौकरी उन्हें अनुकूल नहीं पड़ी। खिन्न होकर २४ जुलाई १८८४ ई. सम्वत् १९४१ में दो मास की विधिवत् नोटिश देकर त्यागपत्र दे दिया और निवेदनपूर्वक अपना त्यागपत्र स्वीकार भी करवा लिया। तब से पूर्णतया आर्यसमाज के प्रचारक बन पं. लेखराम आर्य पथिक कहलाने लगे। आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब के धर्मोपदेशक बन गये। उनकी प्रवृत्ति के अनुसार उन्हें कोई आर्य मुसाफिर कहता था तो कोई आर्य यात्री तो कोई आर्य पथिक कहता। वे स्वयं आर्य पथिक ही लिखा करते थे।

शुद्धि-कार्य तथा अपने कुशाग्र बुद्धि के आधार पर यथायोग्य तर्क प्रस्तुत करने में पं. लेखराम को महारथ/दक्षता प्राप्त थी। फलतः समय-समय पर उन्होंने काफी वन्धुओं को विधर्मी होने से बचाया और काफी लोगों को वैदिक धर्म में परिणत किया। विधर्मी होने से बचाने में दो जनों का विशेष नाम आता है। पहला मुज्जफर नगर जिला के जाट-रईश चौधरी घासीराम का और दूसरा सिन्ध के रईश दीवान सूरजमल और उनके दोनों पुत्रों का भी। मुज्जफर नगर की घटना में ही सम्भवतः चलती रेलगाड़ी से कूद गये थे और लहुलुहान की स्थिति में वहाँ पहुँच कर विधर्मियों को ललकारा और सर्वोचित तर्क व प्रमाणों से इन्हें पराजित किया और अपने वन्धुओं को समय पर आकर विधर्मी होने से बचा लिया। शुद्धि-यज्ञ द्वारा सबको यज्ञोपवित दिया गया जिसमें जिला के जाट-रईश चौधरी घासी राम भी थे।

पण्डित जी का विवाह ३६ वर्ष की अवस्था में लक्ष्मी देवी से हुआ। तब वे रुद्र-ब्रह्मचारी बन चुके थे। प्रकरण के अनुसार मैं बताता चलूँ कि २४ वर्ष में बालक वसु, ३६ वर्ष में रुद्र और ४८ वर्ष में वह आदित्य ब्रह्मचारी की संज्ञा पाता है। इस प्रकार इनका विवाह रुद्र ब्रह्मचारी की अवस्था में होना मान्य हुआ। ऐसा इनकी ईच्छानुसार ही हुआ। सम्वत् १९५० में विवाह हुआ और सम्वत् १९५२ में एक पुत्र पैदा हुआ जो ज्वर से पीड़ित हो कर चल वसा। उसका नाम सुखदेव विधिवत् नामकरण संस्कार करके रखा गया था। कहा जाता है कि पं. लेखराम को पुत्र खोने का इतना गम नहीं हुआ जितना गम उन्हें अपने

भाइयों को विधर्मो होते देख कर होता था । यह भी पता चला कि जब पुत्र की मृत्यु हुई तब भी वे वेद-प्रचारार्थ घर से बाहर ही थे । वे अपने धून के पक्के थे । उनकी धर्मपत्नी लक्ष्मी देवी अनपढ़ थी । उसको अक्षर-ज्ञान मात्र था । पण्डित जी ने उसे थोड़ा-बहुत पढ़ना-लिखना सिखाया । वे चाहते थे कि वह भी उनके धर्म-प्रचार में साथ निभाये । वह साथ देती भी थी पर गृहस्थ-घरेलु कार्य में अधिक व्यस्थ रहती थी । हाँ, दिल से वह उन्हें पूरा साथ देती रही ।

जीवन की काली रात- वे सारा दिन प्रचार-कार्य में व्यस्त रहते थे । मोहम्मदी सिद्धान्तों के कड़े विरोधी होने के नाते उन पर बम्बई, आगरा, कानपुर, प्रयाग आदि अदालतों में मुसलमानों ने कई आरोप लगा दिये थे पर उनकी सच्चाई व वैदिक धर्म की निष्ठा को देखकर न्यायाधीशों ने उन्हें उनके तर्क व सत्य पुष्टिकरण पर सारे आरोपों से मुक्त कर दिया, इससे विरोधी मुसलमान और अधिक उनके शक्त विरोधी होकर उनके जान के पीछे पड़ गये । यहाँ तक कि विरोधी संगठनों ने तो उनकी मृत्यु का फतवा भी निकाल रखा था । तब भी निर्भीक वीर पं. लेखराम अपने मिशन में लगे ही रहे । सम्वत् १९५३वि. फाल्गुन सुदि ३ तदनुसार ६ मार्च १८५७ई, सन् की सायं पण्डित जी थोड़े रूग्ण/ बीमार/ थके-थके से लग रहे थे । जरूरत के अनुसार आराम कर रहे थे । तभी छोटा कद का एक मुसलमान व्यक्ति आया और पण्डित जी से शुद्धि के बहाने मिलना चाहा । लोगों ने रोका कि अब रात होने लगी है; कल मिल लेना पर पण्डित जी ने उनकी वार्त्ता सुन ली और मिलने की आज्ञा दे दी । वह क्रूर व्यक्ति ने समय पाकर छलपूर्वक विश्वासघात किया । कटारी से लगातार आठ घाव उनके उदर/पेट में जड़ दिये । उसे पकड़ तो लिया गया पर उदारमना पं. लेखराम जी ने उसे माफ कर छुड़वा दिया और बोला- “मैं लोगों को दण्ड देने नहीं आया हूँ, बदला नहीं लेना चाहता अतः इसे छोड़ दिया जाये”। काफी चिकित्सा करने पर भी मान्य पण्डित जी नहीं बचाये जा सके । इसी रात २ बजे उनका देहावसान हो गया । फाल्गुण तृतीया तिथि होने से यह दिन आर्य समाज में “लेखराम-तृतीया” आर्य पर्व के नाम से मनाया जाता है । उनके केवल ३८-३९ वर्ष की अवस्था में भी अपने कार्य से पूरी ख्याति प्राप्त कर ली थी । पाठक गण स्वयं कल्पना करें कि किसी व्यक्ति के अन्तिम संस्कार पर २-३

हजार लोग पहुँचें तो उसे नगर का विशेष व्यक्ति माना जाता है, उनकी अन्त्येष्टि-कर्म पर तो लगभग ३०, ००० (तीस हजार) लोग श्रद्धाँजलि देने हेतु उपस्थित थे ।

महामना पं. लेखराम आर्य पथिक जी की महिमा में एक आर्य श्रद्धालु कवि शिरोमणि पं. नाथु राम शर्मा “शंकर” की इन पंक्तियों को प्रस्तुत करना चाहूँगा:-

आलसी के ठौर ठाली, साहसी सोते नहीं ।
मूढ़ मण्डल में विवेकी, काल को खोते नहीं ॥
भोगियों की भाँति योगी, रात-दिन रोते नहीं ।
कायरों के पक्षपाती, सूरमा होते नहीं ॥

इस महामन्तव्य का फल पाये पं. लेखराम ।
तर गये जगदीश के गुण गाये पं. लेखराम ॥

स्वयं की पक्तियों में भी उस वीर आत्मा को श्रद्धाँजलि देना चाहूँगा:-

जगत् में जीयेंगे वीर बनकर, पं. लेखराम दिल बनकर ।
लहुलुहान होना मँजुर है, पर न भागेंगे कभी बुजदिल बनकर ॥
शेरदिल दहाड़ेंगे, वेद-मंत्रों को गायेंगे ।
भाइयों को वैदिक ज्ञान से बचायेंगे, जो फँस रहे हैं मजबूर बनकर ॥

फिर मिलकर होली गायेंगे- अपना वैदिक धर्म है प्यारा ।

गाओ खेलो, मिलकर होली, रंग ले वासन्ती चोला ।
लाल गुलाल गाल में शोभे, मस्तक शोभे पीला ॥
हरा वासन्ती रग-रग शोभे, उमेश मन नचोला- बोला-
अपना वैदिक धर्म है प्यारा । अपना वैदिक धर्म है प्यारा ॥

SACRAMENT **(6th SANSKAR)**

NISHKRAMAN SACRAMENT

Nishkraman Sacrament (Sanskar) is the name of Sacrament in which the child is taken outside of his/her home to a place of fresh air and climate for the very first time.

There are two suitable time to perform this Sacrament. The first one is the third Lunar date of the third Full Moon fortnight from the date of birth of the child. The second suitable time is the date of birth of child in the fourth month since birth. Parents can also take the child out whenever they are happy to perform this Sacrament. They should take the child out to a place where air is fresh and place is clean and it is good to walk about for health.

Nishkraman literally means to go outside of the house. Day light and fresh air is important for the growth of healthy body and mind. After performing this Sacrament it is important to take the child out for fresh air and day light every day for proper physical growth and development of Mind. This will help the child to live long. Whenever it is a good bright day with acceptable outside temperature parents should take time to take their child outside their home. In Yajur Veda 26/15 it says “Uphavre Giriraam Sangame Cha Nadinaam. Dhiyaa Vipro-aJaayata.” In the caves of hills and mountain and at junction of rivers, Rishis (seers) and learned men meditate and roam around because the air is fresh and cool in these places. This is why it is better to choose a place like a big garden, a hermitage in open ground, a place where Havan Yajna (Yajyashala) is performed for the Sacrament of Nishkraman.

Points to consider - It is better to perform Nishkraman Sacrament in the morning or in a place with Havan Kund facility before taking the

child outside the house. It is better if possible for some family member or a friend to accompany the parents.

It is important to consider the following points.

1. There are two alternatives regarding time of performing Nishkraman Sacrament.

The importance of the third Lunar date of the third Full Moon from the birth date of the child-

According to the Vedic literature, the third day of full moon fortnight is auspicious time for performing Nishkraman Sacrament. In Vedic literature this date is auspicious for the worldly development of the child. Please remember that the moon is not commonly visible on 1st or 2nd Day of the Moon fortnight while 3rd day Moon is commonly visible.

The second time is the birth date of the child in the fourth month from the date of the birth.

If the above two dates are not possible then parents can decide a date for Nishkraman according to their convenience.

2. The wife should sit on the left side- On the day of the Sacrament; in the morning after sunrise the parents should bathe the child and dress the child appropriately.

In this ceremony wife sits on the left hand side of her husband. Then wife hands over the child to her husband. It is the same sentiment as written in Naming Sacrament. Both wife and husband take the full responsibility for the welfare of the child. First wife makes her husband to promise to take full responsibility of his child and then she promises herself to do the same.

3. Provision for seeing Sun in day time and Moon in the evening- This is also an important part of this Sacrament. By being in sun light the child feels the warmth of the Sun and in moon light the child feels the coolness of Moon. In order to have a progressive, full of energy, balanced, controlled and happy life. It is important to stay active and do the work in day time and rest and relax in the evening hours. This Sacrament gives the child the knowledge of Science of creation.

The roles of Sun and Moon are important to understand the Science of Creation. This is the reason for performing this Sacrament.

4. To recite Mantras in the ear of the child- Parashkar Grihya Sutra- 1.18.6 advises to recite the Mantras in the ear of a son only. But Maharishi Dayanand Saraswati has advised to recite these Ved Mantras in the ear of all children irrespective of son or daughter. While reciting these Mantras the husband touches the head of his wife.

In this Sacrament the father performs the ceremony without any discrimination between son or daughter in order to make his child well cultured, believe in God and intelligent. By touching the head of his wife he makes his wife feel beloved, respected and his better half.

In all these Sacrament all children, boy or girl, are given equal importance. According to Vedic teachings, children of both sexes have equal rights to get full education, receive all Sacraments and be fully cultured. We must pay attention to these points.

5. Blessings- Under the guidance of a priest if available to perform this Sacrament all the present

**Written by Acharya ji Dr Umesh Yadav in Hindi and
Translated by Dr Narendra Kumar in English**

Republic Day of India Celebrations **29th January 2017**

Over 125 people attended the Arya Samaj (Vedic Mission) West Midlands celebration of the Republic Day of India on 29th January 2017 at the Arya Bhavan. The morning programme started with the performance of Sandhya Havan and we were pleased to have Mrs. Datta (who is regarded as Ved Mata) as one of the Yajmans.

The hoisting of the National Flag ceremony was led by our chief guest of honour Mr. Pankaj Sharma (Consulate General of India) accompanied by long standing members of ASWM. All present participated in singing the national anthem, a moving rendition celebrating our India.

Brij Duggal's opening speech on the importance of our Republic Day focussed on how it is celebrated in India and why this date is of great importance and historical significance. She reminded us of the work of Dr. Bhim Rao Ambedkar who was the main architect in writing the constitution for a self-ruling Government of India...

It was great to hear some patriotic songs from Renu Agarwal Ji and Sketu Yadav reminding us of the sacrifices made by brave men, women and children in their efforts to gain our independence from British rule.

Dr. Narendra Kumar's speech on "The Role of Arya Samaj in the present India" highlighted the problems that continue to exist in India and the vast amount of work that still needs to be carried out to improve things. Corruption is rife in India and as Arya Samaj's we need to advocate the importance of having good morals and honesty for the future of our country. It is sad that the principles and morals laid down for the good of our community are not being valued in today's society and clearly the role of Arya Samaj is vital in ensuring we continue to be recognised for the work we do.

Mr. Pankaj Sharma (CGI) focussed on what we have achieved so far and what we have left behind. In seven decades we have come a long way and Indians are proud of their achievements. We have physical power as well as educational and intellectual power. He emphasised that women's safety is currently being treated as a high priority.

He acknowledged that of the 1.4 million Indian population in U.K there are professionals in every field, many highly educated individual's, and more Indian students attending Universities than any other minority group. He felt we did not have enough representation in politics and that we need to participate in politics and society as well as attaining academic qualifications.

Mrs. Vimla Dodd's speech focussed on the dates of importance and the Retreat Ceremony that takes place on 29th January.

Acharya Ji's speech emphasised the importance of education as it is the basis of forming a good character and how Vedic teachings also help us to do this. He explained that the three colours of our flag stand for the following: 1) Orange for Agni, 2) White for Sewa, love, prerna and motivation 3) Green for Hariyali and villages producing food.

Acharya Ji talked about the need of 'Rashtriye Prem' and gave examples of ways to express this. He identified Ram Dev as a good role model as through his love for his country he is teaching us how to be fit and healthy.

The programme ended with Arti, Shanti Path and Rishi Langar, provided by the Arya Samaj.

Brij Bala Duggal

**General Secretary
Board of Trustees
Arya Samaj (Vedic Mission) West Midlands.**

PLEASE SAVE THE ORIGINAL BOOK **“SATYARTH PRAKASH”**

Dear Members of Arya Samaj (Vedic Mission) West Midlands

Some office bearers of Paropkarini Sabha, Dayanand Ashram, Kesarganj, Ajmer-305001 (Rajasthan), India have made totally unnecessary distorted, mutilated and corrupt changes in the 37th, 38th, 39th and 40th edition of sacred book “**Satyarth Prakash**” written by Swami Dayanand Saraswati in year 1883 and printed as second edition in year 1884. These bad changes have destroyed the true meaning and knowledge contained in the book, as written and desired by the original writer Swami Dayanand Saraswati.

Since 1884 and till 1990 “**Satyarth Prakash**” has been printed as written by Swami Dayanand Saraswati in 1883. It is since year 1991 when Paropkarini Sabha office bearers started their unforgivable practice of altering the contents in “**Satyarth Prakash**” in name of modernising the language and improvement.

This sin is totally unforgivable and intolerable and to tolerate this happening is a bigger sin.

A true follower of Vedas and teachings of Maharishi Dayanand Saraswati can not tolerate these actions of few irresponsible officials of Paropkarini Sabha in India.

The case against these irresponsible individuals is pending in District Court of Ajmer, India.

The members of Arya Samaj community in India have already spent about £8000 on this case.

Now it is paramount duty of us to help the team fighting this court case in India with all the means at our disposal.

According to the present situation we need to collect about £10,000 to send to India.

So we appeal to all of you to donate generously towards this very worthy cause.

The office bearers of Arya Samaj West Midlands are committed to fight this just cause.

You can write to Paropkarini Sabha to express your views on **psabha@gmail.com**

We have to save the immortal book of “**Satyarth Prakash**” of Swami Dayanand Saraswati at any cost. It is our paramount duty to do this.

You can write the cheque in name of “**Arya Samaj West Midlands**” and post it to **Arya Samaj West Midlands, 188 Inkerman Street, Nechells, Birmingham, B7 4SA.**

Arya Samaj West Midlands will always be grateful for your contribution in this matter.

Yours sincerely

**Dr. Narendra Kumar
Chairman
The Board of Trustees**

**Mrs. Brij Bala Duggal
Secretary
The Board of Trustees**



सत्यार्थ प्रकाश में परिवर्तनरूप षडयन्त्र

आचार्य डॉ. उमेश यादव

प्रिय पाठक गण ! पिछले अंक में परोपकारिणी सभा अजमेर द्वारा हो रहे महर्षि कृत अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में परिवर्तनरूप षडयन्त्र के बारे में मैंने कुछ दिग्दर्शन कराया था । उसी क्रम में आज भी कुछ विन्दु प्रस्तुत किये जाते हैं ताकि आप भी आसानी से इस प्रकार के हो रहे षडयन्त्र से अवगत हो इसे बन्द करवाने में शीघ्र ही जागृत हो जायें ।

परोपकारिणी सभा अजमेर को ईमेल लिख कर दबाव बना सकने में आस्वस्थ हो जायें- इसका ईमेल है-psabhaa@gmail.com। यह बताना उचित है कि १८८४ ई. सन् की छपी प्रति ही प्रमाणित है लेकिन उक्त सभा ने ३७, ३८, ३९ व ४० वें प्रकाशन में इस प्रकार के छेड़छाड़ किये हैं और यह धिनौना कार्य जारी है । तुरन्त ही इसे हमें रोकने का प्रयास करना होगा ।

परिवर्तन के अगले विन्दु प्रस्तुत हैं-समझें ।

३. पृष्ठ ९ पर - “ ब्रह्माण्ड, पृथिवी आदि भूत, इन्द्रादि देवता..... की जगह पर

“ब्रह्माण्ड, पृथिवी आदि भूत, मनुष्य, विद्वान्..... परिवर्तन किया गया जो उचित नहीं है। यहाँ ऋषि को “इन्द्रादि देवता” का अभिप्राय “मनुष्य विद्वान् आदि” ही है। परिवर्तन की कोई आवश्यकता नहीं है।

४. पृष्ठ १० पर- “जहाँ जिसका ग्रहण करना उचित हो वहाँ उसी अर्थ का ग्रहण करना चाहिए” की जगह पर “जहाँ जिसका ग्रहण करना उचित हो वहाँ उसी अर्थ का ग्रहण करना उचित है” लिख दिया है। यहाँ पर वार-वार “उचित” शब्द लिखना भाषा के लालित्य को नष्ट करना है। अतः ऋषि ने एक स्थान पर “चाहिए” लिखकर वाक्य को पूर किया। द्वित्व-दोष से बजाव हुआ और भाषा की सुन्दरता भी बची रही।

५. १४ पृष्ठ पर- “जिसका विनाश कभी न हो उसी ईश्वर की आदित्य संज्ञा है।” की जगह पर “जिसका विनाश कभी न हो वही आदित्य संज्ञा ईश्वर की है।” - लिख दिया। यह भी वेतुकी बात है। ईश्वर को आदित्य कहा गया है न कि आदित्य को ईश्वर। न दिति- अदिति और अदिति ही आदित्य है। जो खण्डित नहीं होता वह अदिति ईश्वर है; वही ईश्वर आदित्य संज्ञक है। परिवर्तित वाक्य में उल्टा ध्वनित होता है कि आदित्य संज्ञा का विनाश कभी नहीं होता, ऐसी बात कही गयी है। आदित्य संज्ञा तो सूर्य व प्रकाश को भी यत्र-तत्र कहा गया है लेकिन इनका विनाश सम्भव है। अतः ऋषि का वाक्य ही सही है, परिवर्तन की आवश्यकता कतई नहीं है।

इसी प्रकार आगे के अंक भी परिवर्तित विन्दुओं का दिग्दर्शन कराया जायेगा। आप ध्यान से पढ़ें और समझने की कोशिश करें।

VEDIC VIVAH MELA Matrimonial Get Together and Speed Dating 2017

Date: Saturday 20th May 2017

Venue: Arya Samaj West Midlands, Erskine Street, Nechells,
Birmingham B7 4SA (Road Map available on our Website)
www.arya-samaj.org

Time: 11.30am – 5pm

Cost: - £20.00 Members and £30.00 Non-Members



This spring, we are hosting another popular speed dating matrimonial event on **Saturday 20th May**. It is the ideal opportunity to meet that special someone in a relaxed informal environment with like minded people who are all there for the same reason. Book your place early as numbers are limited. This year we are also inviting non-members to attend, so, if you have a friend who is interested please put them in touch and encourage them to register for the event.

Tickets - £20.00members/£30.00 non-members

How will it work?

We will have registration, welcome drinks, light snacks and mingling followed by speed dating where participants will meet each other for a period of 4 to 5 minutes. During this time, you will be able to chat

and find out about each other, when the time is up the bell will sound and you repeat the process with someone new. Make a note of the name of those you are interested in on the packs given on the day and we will send you their information by email for you to follow up. If you like someone there will be plenty of social time to chat further throughout the day. Once the speed dating is over a late vegetarian lunch with soft drinks will be served and everyone is free to mingle some more before the end of the event. (No alcohol is permitted or served)

What you need to do now?

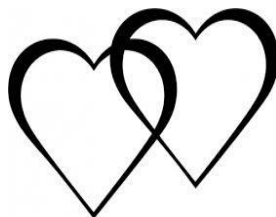
To attend this event, you will need to register by filling out the registration form. **Please see enclosed form** or it is available on-line or by calling Arya Samaj West Midlands. Please complete and return your form no later than **Friday 12th May 2017** to confirm your place together with your cheques made payable to 'Arya Samaj West Midlands' (**Members £20/non-members £30**). Send your payment and registration form including a self addressed stamped envelope to Arya Samaj West Midlands, Erskine Street, Nechells, Birmingham B7 4SA.

You will be sent confirmation by post or email which you will need to bring with you. If you arrive on the day without an entry confirmation you will be unable to participate in the event.

We look forward to welcoming you to the event where you have the prospect of meeting that special SOMEONE!!

Forms are available on our website www.arya-samaj.org. Or tel. **0121 359 7727**

**Kind regards,
Arya Samaj WM, Matrimonial Team**



News

Condolences:

- Mrs Raj Kumari Dhand (Leicester) for the loss of her beloved husband Mr Varinder Kumar Dhand. May God grant the departed souls eternal peace and give strength to the family-members to bear the time of sorrow.
- Dr Pramod and Monica Sabharwal for the loss of their new born baby son. May God keep the departed souls in his divine shelter and give strength to the parents and family-members to bear the time of sorrow.

Get Well Soon:

- This is to inform our members and readers that our Patron Shri Gopal Chandra MBE is recovering in Ryland View Nursing Home, Arnhem Way, Tipton, DY4 7HR and telephone number 0121 520 1577. We all wish him a speedy recovery.
- This is to inform our members and readers that Mr Vishwa Nath Bhandari, ex-Vice President of Arya Samaj West Midlands year 2001-2003 is recovering in Gracewell of Edgbaston Care Home, Speedwell Road, Edgbaston, Birmingham, B5 7PR and telephone number 0121 796 0796. We all wish him a speedy recovery.

Many congratulations to all the following mentioned families who have had auspicious havan at their residences on different occasions or Sunday Vedic Satsangs in Arya Samaj Bhavan.

Congratulations:

- Mr Dinesh Joshi and Family for House warming Havan.

Sponsors:

- **Mr Joginder Pal and Mrs Santosh Sethi for being Yajman on Sunday 26th February 2017 and Sunday 12th March 2017 in Arya Samaj. Havan for happiness in family and B.J.P winning in UP and other states in India.**
- **Mrs Asha and Mr Sarv Krishan Verma for being Yajman on Sunday 5th March 2017 in Arya Samaj. Havan celebrations for Mr Verma's 67th Birthday and happiness for their children, Siddharth, Anjila and son in law Sulabh.**

Donations to Arya Samaj West Midlands

- | | |
|---|------|
| • Mrs Sushma Kumar | £25 |
| • Mr Joginder Pal Sethi with Rishi-Langar | £171 |
| • Mrs Madan Mohan Sharma | £11 |
| • Mrs Asha Verma with Rishi-Langar | £326 |
| • Mr Prem Nanda | £20 |
| • Mr Joginder Pal Sethi with Rishi-Langar | £111 |
| • Dr Purushotam Das Gupta | £101 |

Donations to Arya Samaj West Midland through the Priest-Services.

- | | |
|------------------------|------|
| • Mr Dinesh Joshi | £51 |
| • Mrs Raj Kumari Dhand | £150 |
| • Mrs Sudesh Bhandari | £21 |
| • Dr Satish Thakral | £25 |

Thank you for all your Donations!

**Please contact Acharya Dr Umeh Yadav on
0121 359 7727
for more information on**

- **Member or non member wishing to be a Yajman in the Sunday congregation to celebrate an occasion or to remember a departed dear one.**
- **Have Havan, sankars, naming, munden, weddings and Ved Path etc performed at home.**
- **Our premises are licensed for the civil marriage ceremony.**
- **Please join in the Social group at Arya Samaj West Midlands every Wednesday from 11am. Emphasis is on keeping healthy and fit with yoga and Pranayam. Hot vegetarian Lunch is provided at 1pm.**
- **Ved Prachar by our learned Priest Dr Umesh Yadav on Radio XL 7 to 8 am, first Sunday of the month. Next 2nd April 2017 & 7th May 2017.**

Every effort has been taken that information given is correct and complete. But if any mistake is spotted please inform the office.

0121 359 7727

E-mail- enquiries@arya-samaj.org
Website: www.arya-samaj.org

Changes to Matrimonial Service in April 2017

Arya Samaj (Vedic Mission) West Midlands is dedicated to its matrimonial members to provide a service that will help members find a partner for marriage within our community. We feel it is time to make a few changes to help with this process and move forward with the times.

Changes that will be made in April 2017 are:

Website:-

- A new data base on the website that will give members an option to add a **photo** if they wish and a space for members to write a **bio** about themselves and what they are looking for in a partner.

Matrimonial Service:-

- Members will now be given the **option** to directly contact each other or have the **option** for parents to contact each other.
- All **new** members will be contacted by the office staff for phone conversation during the application process.
- We are also looking in to ways of making our Matrimonial events more successful.

Within our limits we are looking into our system how to serve our member's best way possible. If you have any suggestions please get in touch with Raji either by phone, post or email. Contact details and office hours are on the front page and page 2.